NEWS CLIPPING: 06.06.2021

THE IMPRESSIVE TIMES

WATERMAN DR. RAJENDR A SINGH URGED TO START A COURSE ON 'NOURISHMENT OF NATURE'

Faridabad(TIT NEWS): Well known water conservationist Dr. Rajendra Singh, who is popularly known as 'Waterman of India', has urged higher education institutions to introduce a course on environment issues with a focus on nourishment of nature rather than teaching techniques that supports maximize exploitation of natural resources. Dr. Rajendra Singh was addressing a programme on 'World Environment Day' organized by NSS Cell and Vasundhra Eco-Club of J.C. Bose University of Science and Technology, YMCA, Faridabad. The programme was presided over by Vice Chancellor Prof. Dinesh Kumar. National Awardee Social Worker Rajendra Kumar and Registrar Dr. S.K. Garg were also present and spoke on this occasion. The program was coordinated by NSS Coordinator Dr. Pardeep Dimari and Chairperson of Environment Sciences Dr. Renuka Gupta. Describing the COVID-19 Pandemic as a result of China's ambition to be the leader of the World Economy, he said that in the form of COVID, nature itself has given an opportunity to create an environment. Today human greed has destroyed many types of flora and fauna.

NEWS CLIPPING: 06.06.2021

PUNJAB KESARI

प्रकृति का पोषण करने वाले विषयों पर पाठ्यक्रम शुरू हो : जलपुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह

■ **पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के लिए सभी को निभानी होगी जिम्मेदारी: प्रो. दिनेश कुमार**

फरीदाबाद, 5 जून(पूजा शर्मा): प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी डॉ. राजेंद्र सिंह, जिन्हें भारत के जलपुरुष के रूप में जाना जाता है, ने उच्च शिक्षा संस्थानों से प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम दोहन का समर्थन करने वाली शिक्षण प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के बजाय प्रकृति का पोषण करने वाले पर्यावरणीय विषयों पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने का आग्रह किया है।

डॉ. राजेंद्र सिंह विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे, जिसका आयोजन जेसी बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के एनएसएस प्रकोष्ठ तथा वसुंधरा इको-क्लब द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने की। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सामाजिक कार्यकर्ता राजेंद्र कुमार तथा कुलसचिव डॉ. एसके गर्ग भी इस अवसर पर

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. दिनेश कुमार। साथ में डॉ. राजेन्द्र सिंह। *(छाया: एस शर्मा)*

उपस्थित थे और कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन एनएसएस समन्वयक डॉ. प्रदीप डिमारी और पर्यावरण विज्ञान की चेयरपर्सन डॉ. रेणुका गुप्ता ने किया। कोविड-19 महामारी को विश्व अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने की चीन की महत्वाकांक्षा का परिणाम बताते हुए डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि प्रकृति ने ही कोरोना महामारी के रूप में हमें पर्यावरण सही करने का अवसर दिया है। आज मनुष्य के लोभ ने अनेक प्रकार की वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर दिया है। मैगसेसे पुरस्कार विजेता डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि जब तक भारतीय संस्कृति प्रकृति से जुड़ी रही, भारत के देवता मंदिरों में नहीं, बल्कि मनुष्यों में निवास करते रहे।

इस अवसर पर विश्व पर्यावरण दिवस के विषय पारिस्थितिकी तंत्र की बहालीज् पर एक वीडियो डाक्यूमेंट्री प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी, जिसमें सेठ एनकेटीटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ठाणे, महाराष्ट्र के राहुल धरने ने प्रथम पुरस्कार जीता। इग्नू विश्वविद्यालय की शिवानी और एसजीटीबी खालसा कॉलेज, नई दिल्ली की अनुश्री ने क्रमश: दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया।

NEWS CLIPPING: 06.06.2021

THE PIONEER

प्रकृति के पोषण वाले विषयों पर पाठ्यक्रम शुरू हों : डॉ. सिंह

जेसी बोस विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी डॉ. राजेंद्र सिंह, जिन्हें भारत के जलपुरुष के रूप में जाना जाता है, ने उच्च शिक्षा संस्थानों से प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम दोहन का समर्थन करने वाली शिक्षण प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के बजाय प्रकृति का पोषण करने वाले पर्यावरणीय विषयों पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने का आग्रह किया है।

डॉ. राजेंद्र सिंह विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे, जिसका आयोजन जेसी बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के एनएसएस प्रकोष्ठ और वसुंधरा इको-क्लब द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने की। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सामाजिक कार्यकर्ता राजेंद्र कुमार और कुलसचिव डॉ. एसके गर्ग भी इस अवसर पर उपस्थित थे और कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन एनएसएस समन्वयक डॉ. प्रदीप डिमारी

और पर्यावरण विज्ञान की चेयरपर्सन डॉ. रेणुका गुप्ता ने किया।

कोविड-19 महामारी को विश्व अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने की चीन की महत्वाकांक्षा का परिणाम बताते हुए डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि प्रकृति ने ही कोरोना महामारी के रूप में हमें पर्यावरण सही करने का अवसर दिया है। आज मनुष्य के लोभ ने अनेक प्रकार की वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा कि अगर हमें लंबा जीना है तो हमें भारतीय संस्कृति में छिपे विज्ञान और पर्यावरण की रक्षा के सिद्धांत को खोजना और जानना होगा। मैगसेसे पुरस्कार विजेता डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि जब तक भारतीय संस्कृति प्रकृति से जुड़ी रही, भारत के देवता मंदिरों में नहीं, बल्कि मनुष्यों में निवास करते रहे। हमने भूमि, वायु, आकाश, अग्नि और नीर (भूमि, आकाश, वायु, अग्नि और जल) के रूप में प्रकृति की पूजा की। हम अपने भगवान को जानते थे। हमने नीर, नारी और नदी को सम्मान दिया। उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय परंपरा ने हमें प्रकृति का दोहन करने से कभी नहीं रोका, बल्कि उसका शोषण करने से रोका। अपने संबोधन में प्रो. दिनेश कुमार ने वर्तमान समय में दिन के विषय और प्रासंगिकता के बारे में बताया। इस अवसर पर विश्व पर्यावरण दिवस के विषय 'पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली' पर एक वीडियो डाक्यूमेंट्री प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी, जिसमें सेठ एनकेटीटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ठाणे, महाराष्ट्र के राहुल धरने ने प्रथम पुरस्कार जीता। इग्नू विश्वविद्यालय की शिवानी और एसजीटीबी खालसा कॉलेज, नई दिल्ली की अनुश्री ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. रेणुका गुप्ता ने मुख्य वक्ता का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने छात्रों, कर्मचारियों और समाज को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करने के लिए पौधारोपण अभियान 'एक पौध-एक संकल्प' शुरू किया है। उन्होंने सभी से अभियान में हिस्सा लेने की अपील की।

NEWS CLIPPING: 06.06.2021

AMAR UJALA

प्रकृति आधारित नए पाठयक्रम शुरू करें संस्थान : डॉ. राजेंद्र

अमर उजाला ब्यूरो

फरीदाबाद। जल पुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह ने उच्च शिक्षा संस्थानों से प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम दोहन का समर्थन करने वाली शिक्षण प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के बजाय प्रकृति का पोषण करने वाले पर्यावरणीय विषयों पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने का आग्रह किया है। शनिवार को वह विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन जेसी बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के एनएसएस प्रकोष्ठ और वसुंधरा इको-क्लब की ओर से किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने की। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सामाजिक कार्यकर्ता राजेंद्र कुमार तथा कुलसचिव डॉ एसके गर्ग भी इस अवसर पर उपस्थित थे और कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन एनएसएस समन्वयक डॉ. प्रदीप डिमारी और पर्यावरण विज्ञान की चेयरपर्सन डॉ. रेणुका गुप्ता ने किया। इस अवसर पर विश्व पर्यावरण

विश्व पर्यावरण दिवस : वीडियो वृत्तचित्र प्रतियोगिता का आयोजन

दिवस के विषय पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली विषय पर एक वीडियो डाक्यूमेंट्री प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी, जिसमें सेठ एनकेटीटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ठाणे, महाराष्ट्र के राहुल धरने ने प्रथम पुरस्कार जीता। जबकि इग्नू की शिवानी और एसजीटीबी खालसा कॉलेज, नई दिल्ली की अनुश्री ने दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रेणुका गुप्ता ने मुख्य वक्ता का धन्यवाद किया।

NEWS CLIPPING: 06.06.2021

SATYAJAY TIMES

प्रकृति का पोषण करने वाले विषयों पर पाठ्यक्रम हो शुरू : डॉ. राजेंद्र सिंह

फरीदाबाद, 05 जून, सत्यजय टाईम्स/सुनील अग्रवाल। प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी डॉ. राजेंद्र सिंह, जिन्हें भारत के जलपुरुष के रूप में जाना जाता है, ने उच्च शिक्षा संस्थानों से प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम दोहन का समर्थन करने वाली शिक्षण प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के बजाय प्रकृति का पोषण करने वाले पर्यावरणीय विषयों पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने का आग्रह किया है।

डॉ. राजेंद्र सिंह विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे, जिसका आयोजन जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के एनएसएस प्रकोष्ठ तथा वसुंधरा इको-क्लब द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने की। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता सामाजिक कार्यकर्ता राजेंद्र कुमार तथा कुलसचिव डॉ. एस.के. गर्ग भी इस अवसर पर उपस्थित थे और कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन एनएसएस समन्वयक डॉ. प्रदीप डिमारी और पर्यावरण विज्ञान की चेयरपर्सन डॉ. रेणुका गुप्ता ने किया।

कोविड-19 महामारी को विश्व अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने की चीन की महत्वाकांक्षा का परिणाम बताते हुए डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि प्रकृति ने ही कोरोना महामारी के रूप में हमें पर्यावरण सही करने का अवसर दिया है। आज मनुष्य के लोभ ने अनेक प्रकार की वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा कि अगर हमें लंबा जीना है तो हमें भारतीय संस्कृति में छिपे विज्ञान और पर्यावरण की रक्षा के सिद्धांत को खोजना और जानना होगा। मैगसेसे पुरस्कार विजेता डॉ. राजेंद्र सिंह ने कहा कि जब तक भारतीय संस्कृति प्रकृति से जुड़ी रही, भारत के देवता मंदिरों में नहीं, बल्कि मनुष्यों में निवास करते रहे। हमने भूमि, वायु, आकाश, अग्नि और नीर (भूमि, आकाश, वायु, अग्नि और जल) के रूप में प्रकृति की पूजा की। हम अपने भगवान को जानते थे। हमने नीर, नारी और नदी को सम्मान दिया। उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय परंपरा ने हमें प्रकृति का दोहन करने से कभी नहीं रोका, बल्कि उसका शोषण करने से रोका। अपने संबोधन में प्रो. दिनेश कुमार ने वर्तमान समय में दिन के विषय और प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के लिए हमें पेड़ लगाकर पर्यावरण की रक्षा करनी होगी और प्रदूषण के बढ़ते स्तर को कम करना होगा और पारिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते दबाव को कम करने की दिशा में विशेष ध्यान देना होगा. पर्यावरण हम सभी के जीवन से जुड़ा हुआ विषय है, इसलिए पर्यावरण की रक्षा के लिए हम सभी को सामूहिक जिम्मेदारी लेनी होगी।

इस अवसर पर विश्व पर्यावरण दिवस के विषय ह्यपारिस्थितिकी तंत्र की बहालीह्न पर एक वीडियो डाक्यूमेंट्री प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी, जिसमें सेठ एनकेटीटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ठाणे, महाराष्ट्र के राहुल धरने ने प्रथम पुरस्कार जीता। इग्नू विश्वविद्यालय की शिवानी और एसजीटीबी खालसा कॉलेज, नई दिल्ली की अनुश्री ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रेणुका गुप्ता ने मुख्य वक्ता का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय ने छात्रों, कर्मचारियों और समाज को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करने के लिए पौधारोपण अभियान ह्यएक पौध - एक संकल्पह्न शुरू किया है। उन्होंने सभी से अभियान में हिस्सा लेने की अपील की।

NEWS CLIPPING: 06.06.2021

DAINIK JAGRAN

वर्चुअल लैब के बारे में विस्तार से जानकारी दी

वि., फरीदाबाद: जेसी बोस (वाईएमसीए) विश्वविद्यालय ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली की वर्चुअल लैब के सहयोग से एक दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के सभी डीन और अध्यक्षों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों सहित 1200 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने की। उन्होंने कहा कि वर्चुअल लैब की मदद से छात्र अब ऐसे प्रयोग कर सकते हैं, जो घर पर लैब सुविधाएं न मिल पाने के कारण नहीं कर पा रहे थे। रिमोट एक्सपेरिमेंट के माध्यम से उन्हें बुनियादी और उन्नत अवधारणाओं को जानने और सीखने में मदद मिलेगी। कुलपति ने रिमोट लर्निंग (दूरस्थ शिक्षा) को बढ़ावा देने के लिए ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन के लिए विश्वविद्यालय कंप्यूटर केंद्र और डिजिटल अफेयर प्रकोष्ठ के प्रयासों की भी सराहना की। कार्यक्रम में कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष डा. कोमल भाटिया भी उपस्थित थे। कंप्यूटर सेंटर और डिजिटल अफेयर सेल की निदेशक डा. नीलम दुहन ने कहा कि विश्वविद्यालय ऐसी डिजिटल पहलों को बढ़ावा दे रहा है ताकि विद्यार्थी वेब संसाधनों, वीडियो व्याख्यान, एनिमेटेड डेमोस्ट्रेशन और सेल्फ असेसमेंट जैसे उपकरणों का लाभ उठा सके। वर्चुअल लैब के नोडल समन्वयक डा.ललित मोहन गोयल ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।